

3051

११८
शीतल स्तोत्र

स्मरति श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ सदा नंदो वा न ॥ ॥ नामो वारुक्तं
यस्य प एतिषत् देवता ॥ पापाणी प्रातिविलंघ्यं पुन्य भवति
वाक् ॥ ॥ सदानंदनामसविलेसवेस्वरुत्तु थिः प्रो ग्पा ग पा
व ॥ हे सवेस्वरुत्तु रस्पा पदारथ सु न जो को हि पुरुष लेस्त्रि ज
न लेत्तु ल सि भ नि स्मर ना गर ॥ ॥ उ न दे वि पर मे श्वर स तु वः हुं वं
पाप को ना सः ॥ ॥ प व त वि से ष क ति यु ग मा तु ल सि ये स्ता भ नि ॥

प्रकाशैलेत्तु ल सि को म नु ज प त सो मो प द जां द्य ॥ १ ॥ सा क थं त्नु ल
सिलो कै प जि ता व दि नं दि हि ॥ दर्श ने ना पि य त्र तं फ लं को हि ग वं द दे
त् ॥ स सार लो क लेत्तु ल सि को नि त्प द र्शन प ना गर त्नु ल सि को र स्मर
ना गर प क प त्र दे ष्या पा र को टि गो दा न ग म्पा त ति को प पुं हं द्य ॥ २ ॥
ध न्पा र्तुः मा न वा लो काः य स्मि प म क्ती ती व्र जे त् ॥ सा न ग्राम शि ला
वार्थं लु ल सि प्र हं सु वी ॥ प्र का शै ले सु वि स्था न मा हा सा नि ग्रा
म स्था प ना गर त्नु ल सि ला व त उ स भू मि क नः पु न्य भ मि भ नि व

जो को हि गार धन्य पुरुष मनि द्या ॥ ३ ॥ तुलसि बे नि वि सत्पं धं त्यो त
कर पल्लवो ॥ के स वा र्थ क हो ये व शे प धं ति ड भू त ले ॥ य स्क् स से
ले । श्री क रू ण नि क नः भु मि मा तु ल सि ला व त गो ड ना गर
न ह रू क हि येः उ न का ॥ ४ ॥ किं क रि ष्य ति सं पू ज्य मा नो वि
भव वि स्त रे ॥ तु ल सि द ले न दे वे सः प जी तो ये न दे प हाः ॥ य स्क्
से ले तु ल शि का पा त ले पर मे श्व र को पु जा गर प्रति पु हं च ॥

५ ॥ स मं ज ति ई ले यु क्तः क स वा य ह मं ड ले ॥ कु र्वं ति पृ त न ये व ले
जा ति पर प्रा ग ति ॥ जो पुरु ष ले भै क न मं ड ल व ना उ चं तु ल सि को दे व त व
ना ई ॥ प्र ने क वि ज वि वि ज तु या उ चं ॥ सो मो प द आ न्धं ॥ ६ ॥ स्ना ने द
ने त था ध्या ने प्र स ने के स वा र्थ ले ॥ तु ल सि कि र्त ना त सिं प स द धि स
पु रं ॥ य स्क् से ले स्ना न दान ध्या न्न प्रा स न ग या प नि पर मे श्व र को पु
जा ग या वा ति तु ल सि को कि र्त ना गर से । अ धि क पु न्य उ चं ॥ ७ ॥

तुलसिप्र भवेत् त्वं प्रभवे विद्वज्जलभं ॥ केसवाद्यविद्विदत्वा
सैभित्तंतस्यरुतकं ॥ तुलसिका जराकोमा दोसर्वांगलेपनागर
परमेश्वरकोपियहृदं ॥ माटोलायाको हातप्रतिपवित्रहृदं ॥ व
त्तदंगसंभवे नित्यं प्रजयामि यथाकुरु ॥ तथाकुरु पवित्रांगकलो
मलविनासनः जोयोपाठगरः हरीकोपु जागरः तुलसिस्मरनागरः सो
देहिः प्रतिपवित्रहृदं ॥ ८ ॥ मन्त्रेनाने पकुर्व्या गतिं त्वा तुलसिदले ॥

पु जतवस्य देवायः तज्जै कोटि नंतमेत ॥ १० ॥ जो तुलसि को मन्त्र जप गर
तुलसि को विजरोपनागरः तक्षकोटि पर्यं संम इच्छर सगरहृदं ॥ ११ ॥ जत्र
राजहरे नित्यं प्रियं प्रियतरं सुभः ॥ सु नयसिद्ध गंधर्वापातलोपनगेस्वर
॥ १२ ॥ परमेश्वरकोपियारापितवरत्रः तुलसिदल इहा देधि अर्को आथिनः
दिह गंधर्वा नागलोक हुरु पति सुतिगर्द ॥ १३ ॥ स्तुवंति सर्व देवा
किं नारायण सतमा ॥ कक्षागच्छेद स मूला समुद्रमथने पुरा ॥ १४ ॥

८८॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८८ ॥ गोमति कातिरतिरमा कृतसिरोपनाग
पादकृत्स्नतेपातनागपादकृत्स्नलोसोद्वयकृत्स्नगोपितिसगवकागया ॥
१४ ॥ अङ्गिष्ठवदनात्यन्तमेनसरज्जुतटे ॥ दसगववधार्थायः शेषि
नाकृतसि वरा ॥ १५ ॥ विद्योगरागदेवस्यः ध्यायन्ती जनका मता ॥ अ
सौ कवनिता मध्यः शेषिना प्रभू सगता ॥ १६ ॥ रावन्ते सितालेवो रिहो

कुलसिद्ध
उपकासमपराभक्तविजोगभयोरसितालेप्रसोकमात्रिका
मातुलशिरोपनागरिन्दु उसपुन्यलेफिरिरामवद्रस्वामिपाईन्
॥१॥ सकरार्थ उमादेविष्णु रावेवहि मावते ॥ रोपितासततभक्त्यातुल
सित्पानमाभ्यहं ॥१२॥ परापूर्वमाहि मातृपर्वतमाः पार्वताहं रोपना
गरिन्दु उहापुन्यलेमाहा देवस्वामिपाईन् ॥१३॥ प्रयागेवसितानित्यं क

रणेमाधवस्पदा ॥ रोपितात्वं श्रीयादेवा गगाजलसमिपगा ॥१४॥ प्र
यागवेनिकानिकटमातृफिलेतुलसिरोपनागरिन्दु उसपुन्यलेना
रायणस्वामिपाईन् ॥१५॥ वसिष्ठकुंडसमिपेतुसावित्रीरोपना
कृता ॥ पुष्करेपरमेश्वरं तुलसिभानमाभ्यहं ॥१६॥ परापूर्वमासा
वित्रिलेः तुलसिरोपनागरिन्दु उसपुन्यलेवामास्वामिपाईन्

॥१८॥ सर्वाभिदेवपत्निभिर्किं नृरिभिश्चलेपिता॥ खप्रेतु मंग
लार्थायः सेविता त्वेन ओस्तुते॥२०॥ देवस्त्रीते न्की नस्त्रिते स
र्वस्त्रिते स्वप्रातरमातुलनसि कौमस्तुत गगारस्वामिभक्तपा
द्या॥२०॥ धर्माश्चर्यगपाद्यावैरोपितापित्रीमिश्यद्यं॥ सेवि
तातुलनसि पूज्यस्वामिनोहितमिद्यता॥२१॥ आक्रास्वा

मिक् नरुवावनाकत धर्माश्चर्यगपाद्यावैरोपितापित्रीमिश्यद्यं॥२१॥ आक्रास्वा
स्त्रिते तलशिशोपनागगारस्वामिभक्तपाद्या॥२१॥ रोपि
ताशमदेवै नशिवितातुलनसि कौमस्तुत गगारस्वामिभक्तपा
द्या॥२१॥ धर्माश्चर्यगपाद्यावैरोपितापित्रीमिश्यद्यं॥ सेवि
तातुलनसि पूज्यस्वामिनोहितमिद्यता॥२१॥ आक्रास्वा

गरिन् ॥ २२ ॥ त्रैलोक्ये व्यापि निगंगा पथा सास्त्रे षु गि यते ॥
तथैव तुलशि लोके दृश्यते वरा वरं ॥ २३ ॥ तिनस्त्री लोका मा
गगा दुहि सास्त्र मागिता देवता मातुल सि दु हि ॥ २३ ॥ रण
श्री कीर्त्ति ध्यायं व क पिरा ये न सेविता ॥ तुलशि वारि ना र्था य
नारा संग महेतने ॥ २४ ॥ कि र्त्ति ध्यान गरमाः स ग व ले तुल

शिरोपना गपा का प न्य ले ना ति मो व न गरि ता रा पा द्या ॥ २४ ॥
॥ प्रा न म्मा तुल शि दे वि सा ग रो त्क म ते क ते ॥ स्वा मि का
र्के प्र दु ष्ण तु ल न्मा न्य न रा ग ते ॥ २५ ॥ तुल मन ले स मु
द्र पार म द्या का स म य तुल शि क न न म स्का र ग पा था
र उ स पु न्य ले ल का जा इ क न स्वा मि का र्थ म द्या था

॥२५॥ तुलशिगुह न दृष्टा विमुपेयाति पातकं ॥ सर्वदा मुनि
सा दुर्लभं ब्रह्मरुत्यादि सोषणत् ॥२६॥ परस्कासेते तुलसि
कोवन देवपात ब्रह्मरुत्यादि पातक जां ह ॥२६॥ तुल
शिपत्र गंदिनं यस्तो यशिर मक देत ॥ गंगा पुन्य स वा प्रोति
द सधे न फलं प्रदं ॥२७॥ तुलसिका पातको जल सिर व

क्रावत गंगा स्नान गम्या कोद सगा इ दान गम्या जति कोप
न्य हुं हं ॥२८॥ प्रसिद मम देवेशः प्रसिद रुदिवत्सल ॥ दिशे
द मथ भुतं तुलशि त्वेन मा म्य रु ॥२८॥ यो यो शिलो ग
भा विम न तुलशि का पातका जल ले शिव न् ॥२८॥ द्वाद
स्पजा गते रात्रौ पटि त्वा तुलशिस्त वं द्वा त्रि शत पराध श्र

भूम्यतेतस्यके शब्द ॥२८॥ वरुण इति द्वादशिकादि न जाय
तगरनुत्तु तद्विशिष्टोत्रपाठ गन्तु तव वृत्ति द्वा प्रपराध ग मा का
श्रीकृष्ण माफ गद् ॥२८॥ यत्पापं यो वने वा ले को मारे वा
ध्वं के के तं ॥ तसर्वं विप्रैर्जातिरुत्तु तद्विशिष्टो न मा म्पु ॥२९॥
उत्तसिकोस्तुति पाठा गणि मा गै वा न यो वन व द्वा क्त्वा वस्था
न का पात क द्वा द्वा न ॥३०॥ एति मा या ति दे वे सः स्तु तां ह स्मी
द दा ति व ॥ कुरु ते सत्र ना सं वः स्वयं विद्या द दा ति व ॥३१॥ तत्त
सिस्तोत्र पाठ गन्था पारु श्रीकृष्ण सत्तु ए ह्दं ह्दः तस्मिन् विद्वि
द्या प्राप्नु ह्दं सत्र को द्वा य ह्द ॥३२॥ तत्तसिस्तव सत्तु ए मयं म
पु द दा ति व ॥ महते हे तया पाप विद्म ना ह्द य ते भणात् ॥३३॥ तत्तसि
स्तोत्र पाठ गन्था पारु श्वर सत्तु ए ह्दं ह्दं पाप मो वन गदि अत्य मत्त
जा न्द ॥३४॥ गहे यस्मिंस्तवं नित्यं निषित वापि परतव ॥ नास्तु भं वि

घतेतस्यमंगलवर्द्धनेन॥३३॥ परस्मैल्लेघरनिष्पपाठगारतप्स्त
र्कतुल्याउदंशसुभमगतहुदेन॥३४॥ सर्वत्रमंगलतयस्यना
स्तिकिविदमंगलं॥ निष्पपाकेसवेसक्तिर्नवियोगेश्वरैश्च
वि॥३४॥ परस्मैल्लेनरायनकोभक्तगरुडलक्षिततिगर
तकल्पानरुद्ध॥३५॥ तिर्यकोटिसहस्रानियत्फलमने
नर॥ तत्फलं समाप्नोति पठित्वा तु तसि सार्व॥३५॥ पदापुर्वका

प्रगालोकोटिसहस्रतिथ्यंग-पाप-व्यफलपकातिरतराजु माश
प्यास्तु तद्विशेषकातिरराप्यार गोपिहे पादुद्वराधरि मया
मनीक नतु तसि देपिदु लोप्याको प्रापि नतदा नंद मपि
लेसपेस्वरु रुथि प्राप्ता गदुन - इति श्रीस्कन्दपुराणे दलदि
माहात्म्ये नृसिंहाय संपूर्णं ॥ समाप्तं सुभम् ॥ ॥ = = = =

अमृतमणि
ASMA ARCHIVES

3051

स्वस्ति श्रीगणेशायनमः॥ ॥ अथ माशिक श्राद्धे शान्तोदकं भो
'सर्गान्तसकल्पविधि' ॥ तत्र भूमौ गोमयापनिषेकं तस्य विरा
वात्तसंकल्पंकुर्व्या ॥ ॐ अथ हेत्यादिदेशकालोत्तरा
माशिक श्राद्धं करशान्तिमित्यर्थेदिपुं प्रजातनमहं करिष्ये

॥ प्राङ्मणोपविस्था ॥ अथ सर्वे ॥ ॐ वेदेवा देवहेतुन भित्तिक सिक्का
नयेराक मणोपात्रं कना ॥ अथ तेन कुशत्रयशक्तिक मणोपात्रोदकमा
दा ॥ ॐ अथ वित्रपवित्रो वेत्पादि श्राद्धदेशे द्रव्यानां ज्ञानवासि
वयेत् ॥ ततः कसत्रयशक्तितिलजलात्पादाय ॥ अथ मणोसि
कशा नोदकं मणोपस्थितिस्वर्गता स्वपयनं जंभफूलप्राप्ति

का मणोः अथ क गोत्रस्यास्मत्पीतुरमुकश मणोः शानोदक
कं मणोः सर्गपूर्वकान्न सकृदादिक रूपमासिक श्राद्ध मणिद्रव्यैर
हंकारिष्येत् ॥ ॐ देवता भक्तपदेत् ॥ ततः अपसव्यं कत्वादभीनां
मिष्टमणो भक्त्याशा नोदकं मणोयतक वाक्शदिमा दाय ॥ ॐ

अथ मुक् गोत्रस्मात्पितुरमुक् शर्मराः अथ कर्तव्यमा
सिक् श्राद्धे ईदं आशान ते स्नधा ॥ ततो गंध पूष्पाक्षत धूपदि
पानैवेद्यवासाशितु म्यस्वधाः इत्युत्सृज्येत् ॥ तत मोदकमा
दायः अथ मुक् गोत्रायास्मात्पित्रेऽमुक् सर्मरा अथ शा

नोदकं कुंभस्तु म्यस्वधेति कुंभं मुत्सृज्येत् ॥ अथ मुक् स्वा
मिसंकल्पः ॥ ईदं मन्त्रं सजलयेत् अस्वाभिपित म्योनमः
अथ अन्नसंकल्पः ॥ सोपस्करतिलजलद्युतमंनं मु
धनि पिमच्छुनाभिधार्य अधो मुष्णाभ्यां पानिभ्यामां

नृपात्रमालम्भः ॥ ३५ ॥ यथिवितेपात्रं द्यौरविधानात्तन्मदुपे
मत्तज्जमे मिखाहा ॥ इदं विदुर्विवक्तमेतरेधादिदचेपदम्
समुद्धमस्यपा ७ सुरेविप्रदाभिरास्यागुं निवेस्यईदमनं
इत्यान्वोनइदमायइति जालिनइदमाज्पंडतिद्युतेणाइदरुवि

रिति पुनरग्रेणा ३७ अपहताग्रशूराभ्या ७ सिवेदिषत ॥ इति
ति लाद्वोपरिविकिर्य ॥ मोहकादिन्यादायवामहस्ताग्रं
गुलिभिक्रमेणाद्वजलसमिप्यंकरश्चित्ता ॥ अद्यत्रमुक्
गोत्रायास्मन्नित्रे अमूकसमर्णोईदमंनसजलसं सोपस्कंरं प

रेवे पृथिवीष्यमानं मभयत् पिह तो स्ते ख धा ॥ ई-पान् मू-सू मे
त ततः मधुवाता मवापाठः ततो अतिदद्यात् ॥ मधुमधुमधु
अथ हि न कीया हि न विधि हि णा मित्या दिपठेत् ॥ ततः सिवाया
पसन्तुः इति जलं सोमनस्य मस्तु मिति पुष्पं प्रसतं वारिष्ट
मितितंडुलान् ब्राह्मणं स्तेदद्यात् ॥ सव्यकृत्वा ॥ अपा

मठे स्थितो देवा स्वर्गमस्तु प्रति पिता ब्राह्मणस्य करे नि
रन्वा शिवायापो मवाप्त मे ॥ ततः अस्मान् कुले दिद्यमायु
रस्तु शानिरस्तुः पुष्टिरस्तुः वदिरस्तुः यत्पापतस्तु कृतमस्तु म
मोदि पदेव लुप्यदे शांतिरभवत् ॥ ततः शव्येनः दधिना द्रव्य
मादाय ॥ ३ अथ मूकगोत्रस्यास्मात्पितरं कशर्मा

कतेतः शान्दोदकं भोः सर्गान्तसंक्लृप्तादिकरूपमासि
कश्राद्धप्रतिष्ठाशागतासि ध्यथं दक्षिणां रजनवन्नदेव
तंतां मसुर्लदेवतां यथानामगोत्राप्रः यथानामंशमं
शोवाभरणाय दक्षिणात् अमंशं प्रपदेत् ॥ यन्कृतं तत्सु
कृतं मसुर्लप्रमादात् प्रमादाकुर्वन्तामिति पठेत् ॥ ततोवा

मरा मंत्राणि योऽहं हि त्वायं कामं काममिति तिलकं ॥
इति मासिकश्राद्धविधिशमाप्रश्नमम् ॥ ॥ ॥ ॥

स्यस्ती श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशालादेव्यै नमः ॥ ॐ नमः श्री
शितलास्तोत्रमगस्पृष्टा मदेव कर्तुं गतिं ददशितलादेता

विस्फोटक भयनिवारणार्थेऽप्येविनिधोग ॥ ॐ क्रिंतमः शि
तलाये विस्फोटक ताराय शत वदे द घटे द पदा रुश म वरुन
मः शितने स्यात् ॥ ॥ त्क ५ उवाच ॥ ॥ भगवान्देवदेवेश शि
तलायात्ता वभु भम् ॥ ॥ यत्तु मरुत्स्य शीघ्रे न विस्फोटक भया
पत्तम् मार्जनि कृतशोपेता इत्युवाच ॥ ॥ तस्मात्प्रशित

लादे विराश भयादि गवरा म् ॥ मार्जनि कृतशोपेता सुख्यं तं
कृत मस्तकम् ॥ २ ॥ बन्दे रुं शितलादे विरावरीग भयापह
म् ॥ ॥ यामासाधनिवर्तित विस्फोटक भयापत्तम् ॥ ३ ॥ शि
तने शितने वेति यो वृषादा रुपि दित ॥ विस्फोटक भया
द्यारदि प्र तस्य विराशति ॥ ४ ॥ यत्तु वामु द मदे तु क

त्वास्पृजसंभारः॥ विस्फोटकं भयं घोरं गते तस्येतु जायते॥
५॥ शितले ज्वरदुःखस्य पुजितं चंगतं स्युः॥ प्रणवद्वयं पुंश
रुपा मातुजिह्वनौषधम्॥६॥ शितले तनुं शरीरं गदुष्टा रुचि
सिरुपजान्॥ विस्फोटकं विशिर्ताणं त्वमेका मृतवर्धिति
॥७॥ जलं शीतं शरीरायैवां नैव रुणादप्या॥ ८॥ दनुष्यान्

मात्रेण शितले पातिसकृत् ॥८॥ तमग्नौषधं किं वि
त्पापशेषस्य विद्याते॥ त्वमेका शितले त्रातिर्तापपरा मि
देवता॥९॥ मृतं तनुं शरीरं शितं मृतं सस्यीताम्॥ यस्या
संवितवेदे वितस्य मृतं जायते॥१०॥ श्रीक शितलो देव्या
व्यपठे मातवशदा॥ विस्फोटकं भयं घोरं कुतस्तस्मै नमो

आद्यमासिक दि ११/१

उन्मासिक	दि	२५१२
द्वितीयमासिक	दि	३०३
त्रैपक्षिक	दि	४५४
तृतीयमासिक	दि	६०५
चतुर्थमासिक	दि	७०६
पंचममासिक	दि	९२०७
षष्ठमासिक	दि	९५५८
उन्षणमासिक	दि	९७५९

सप्तममासिक	दि	१८०/१०
अष्टमासिक	दि	२१०/११
नवममासिक	दि	२४०/१२
दसममासिक	दि	२७०/१३
एकादसमासिक	दि	३००/१४
द्वादसमासिक	दि	३३०/१५
त्रिंशमासिक	दि	३५८/१६
अधिकमासिक	दि	३६०/१७

स्वस्ति श्री गणेशाय नमः तोयं गंध तिला यवा दत्त कुशान्पाज्यं
 पयः सर्कणदध्ना चैव तदघ्रात्रयुगलं पुं गीफलं न्यासनां नैवेद्यं
 दधू पदीप वस्त्रं पुण्यापवित्रं मधूः फलं शैकतदक्षणा च कुसुमं
 पात्राणी गंगादकैः ॥१॥

3051

Small text, possibly a date or library stamp, partially illegible.